वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.355
ISBN-978-93-82071-32-7

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र परिचय एवं पूजन

(चालीसा एवं भजन सहित)

–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद –

दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–प्रस्तुतकर्त्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि समन्वित)

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित हो रही भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा के मुख कमल निर्माण के शुभारंभ हेतु शिलापूजन के अवसर पर प्रकाशित-मगसिर कृ. पंचमी, 3 दिसम्बर 2012

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	मगशिर कृ. पंचमी, 3 दिसम्बर 2012	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी के परिचय एवं पूजा की यह पुस्तक समय की आवश्यकतानुसार श्रद्धालु भक्तों के हाथों में पहुँच रही है। श्री रामचंद्र एवं हनुमन्तादि 99 करोड़ मुनियों की निर्वाणभूमि होने का इस तीर्थ को गौरव प्राप्त है। महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में अवस्थित यह दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अब सारे संसार की दृष्टि में इसलिए आ गया है कि इस पर्वत पर 108 फुट उत्तुंग तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा का निर्माण हो रहा है।

इस पावन तीर्थ पर बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से अनेक निर्माण हुए, पुनः उनकी प्रेरणा से निर्मित वृहत्काय चौबीस तीर्थंकर मंदिर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की 21 फुट उत्तुंग श्यामवर्णी खड्गासन प्रतिमा के साथ-साथ चौबीसों भगवान की 6-6 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमाएँ (शासन देव-देवी एवं अष्ट प्रातिहार्य समन्वित) विराजमान हुई हैं। फरवरी सन् 1992 में आचार्य श्री की समाधि के पश्चात् उनकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सन् 1996 में पूज्य मुनि श्री रयणसागर महाराज, गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हो चुकी है। उसी प्रतिष्ठा महोत्सव को सानंद सम्पन्न कराने हेतु पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सहित सन् 1995-96 में हस्तिनापुर से मंगल विहार हुआ एवं पंचकल्याणक के बाद सन् 1996 में उनका मंगल चातुर्मास भी सिद्धक्षेत्र पर अत्यन्त प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यह चातुर्मास सम्पूर्ण जैन समाज ही नहीं, दुनिया के लिए वरदान सिद्ध हुआ, क्योंकि उसी प्रवास के मध्य शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य माताजी ने अपने चिन्तन एवं ध्यान के आधार पर ऋषभदेव प्रभु की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा निर्माण करने के लिए घोषणा की और धीरे-धीरे सारी औपचारिकताएँ परिपूर्ण करके मूर्ति निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया।

पूरे देश की दिगम्बर जैन समाज ने इसमें तन-मन-धन का सहयोग प्रदान किया है, तभी हम आज पर्वत के अखण्ड पाषाण को प्राप्त कर सके हैं और अब वह दिन शीघ्र आने वाला है, जब भगवान ऋषभदेव उसमें प्रगट होकर अपनी

वीतराग छवि का दर्शन सबको कराएंगे। प्रतिमा के मुखकमल निर्माण का शुभारंभ वीर निर्वाण संवत् 2539, मगसिर कृ. पंचमी, सोमवार, 3 दिसम्बर 2012 को होने जा रहा है।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थ के पवित्र परिसर में मूर्ति निर्माण की सम्प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के सान्निध्य में भारत के प्रसिद्ध शिल्पकार श्री सूरजमल जी नाठा-जयपुर (मूलचंद रामचंद नाठा फर्म के प्रमुख) को तिलक करके मूर्ति निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गई। पुनः इस महाकार्य की निर्विघ्न सम्पन्नता हेतु पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान (दिनाँक 20 नवम्बर 2012 से 28 नवम्बर 2012) कार्तिक अष्टान्हिका पर्व में सम्पन्न कराया। विधान में सवा लाख मंत्रों का अनुष्ठान करके भक्तों ने अपूर्व पुण्य का संचय किया।

इन समस्त कार्यों में हमें पूज्य बड़ी माताजी के तपोबल का आशीर्वाद तो प्रतिक्षण प्राप्त होता ही है, साथ में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन भी सदैव रहता है। इसी शृँखला में उन्होंने मांगीतुंगी के संदर्भ में नई पूजन की रचना करके चालीसा-भजन-आरती आदि की यह पुस्तक प्रदान करके प्रशंसनीय कार्य किया है। इस पुस्तक के माध्यम से भक्तगण तीर्थ परिचय के साथ ही पर्वत पर बनने वाली मूर्ति की भी पूजन करके सातिशय पुण्य का संचय करेंगे।

भगवान ऋषभदेव एवं उनके शासन देव-देवी गोमुखयक्ष एवं चक्रेश्वरी माता हमें शक्ति प्रदान करें कि प्रतिमा शीघ्र बनकर पूर्ण होवे एवं अनादि जैनधर्म की कीर्ति पताका दिग्दिगन्तव्यापी हो, यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

प्रबंध सम्पादक की कलम से.....

–जीवन प्रकाश जैन

Work is Worship अर्थात् कर्म ही पूजा है, इस वाक्य को पढ़ा और सुना तो कई बार है किन्तु इसका साक्षात् स्वरूप देखा है हमने सरस्वती की साक्षात् मूर्ति पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी में। जिनके जीवन का एक पल भी कभी व्यर्थ जाता नहीं दिखाई देता है। वे हर क्षण नये चिन्तन एवं नूतन सृजन में लगी रहती हैं। यही कारण है कि उनका शिष्यवर्ग भी जन-जन का प्रेरणास्रोत बना हुआ है। माताजी की जिह्वा से निकले प्रत्येक शब्द को प्रारंभ से ही साकाररूप प्रदान करने वाले सजगप्रहरी के रूप में उनके शिष्य त्रय (पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, कर्मयोगी स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी) रहे हैं।

इनमें से मोतीसागर महाराज की समाधि (कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा-10 नवम्बर 2011 को) के पश्चात् शिष्यद्वय अपनी पूरी टीम (संघ एवं संस्था) के साथ हर कार्य को द्रुतगति से सम्पन्न कराने में सदैव संलग्न रहते हैं। साहित्यिक कार्यों को जहाँ पूज्य चंदनामती माताजी संचालित करती हैं, वहीं पूज्य माताजी की निर्माण प्रेरणाओं एवं धर्मप्रभावना के महान कार्यों को पूज्य पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी जिस कुशलता के साथ सम्पन्न कराते हैं, वह प्रत्येक शिष्य एवं सामाजिक कार्यकर्ता के लिए अनुकरणीय है। वर्तमान में तो स्वामी जी अपनी कर्मठता से अभिनव चामुण्डराय का ही उदाहरण बन गये हैं, इसीलिए शास्त्री परिषद द्वारा वर्षों पूर्व प्रदत्त की गई ''कर्मयोगी'' की उपाधि उनके ऊपर पूर्ण सार्थक बैठती है।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत पर बन रही 108 फुट की प्रतिमा जिनशासन की आन-मान-शान है, जो कि दिगम्बरत्व के यश को अमरत्व प्रदान करने जा रही है। मूर्ति निर्माण के प्रारंभिक चरण में इस पुस्तक का प्रकाशन भक्तों के लिए उपयोगी है। इसे पढ़कर आप सभी मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से परिचित होंगे तथा पूजन-भजन-चालीसा आदि के द्वारा पुण्य का बंध करके सुख-सम्पन्नता प्राप्त करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

पुस्तक की प्रेरणास्रोत, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद् उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी,कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत – 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि – तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला', भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, समयसार ग्रंथ की सम्पूर्ण (444) गाथाओं की संस्कृत में मंत्र रचना, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन,बारहभावना आदि) इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली नई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

आज से 9 लाख वर्ष पूर्व बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के तीर्थकाल में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र ने उत्तर भारत के परम पावन तीर्थ अयोध्या में जन्म लेकर अपने क्रियाकलापों से संसार में आदर्श उपस्थित किया था पुनः जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर विहार करते हुए दक्षिण भारत के इस पर्वत पर आकर उन्होंने कठोर तपश्चर्या करके मोक्षधाम प्राप्त किया था। उनके साथ ही हनुमान, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाक्ष, नील, महानील आदि 99 करोड़ मुनियों ने भी इस पर्वत से सिद्धपद प्राप्त किया है, ऐसा पद्मपुराण आदि जैन ग्रंथों में वर्णित है।

महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में स्थित मांगीतुंगी (भिलवाड) ग्राम के उत्तर दिशा की ओर एक पर्वतराज है, जिसकी दो चूलिकाएँ हैं। प्रथम श्री मांगीगिरि व द्वितीय श्री तुंगीगिरि के नाम से प्रसिद्ध है, जो देखने में अद्वितीय है। यह पूरा पहाड़ी क्षेत्र ''गालना हिल्स'' कहलाता है, जो समुद्र सतह से 4500 फीट की ऊँचाई पर है। दोनों गिरि पर दिगम्बर जैन गुफाएँ हैं, ऊपर गगनचुंबी शिखर हैं।

इन दोनों गिरि पर हजारों वर्ष प्राचीन प्रतिमाएँ एवं यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ विराजमान हैं। तलहटी से 250 फीट ऊँचाई पर शुद्ध-बुद्ध मुनिराज के

नाम से दो गुफाएँ हैं। इन गुफाओं के अंदर मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथ एवं भगवान नेमिनाथ विराजमान हैं। वस्तुतः मांगीतुंगी गिरि पर अनेकों दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं तथा अनेक इतिहासों को अपने गर्भ में संजोए ''मांगीतुंगी'' सिद्धक्षेत्र प्राचीनकाल से एक तपस्वी की भांति अडिग और निष्कामरूप से खड़ा अपनी पावनता का संदेश दे रहा है, जहाँ भक्तगण श्रद्धापूर्वक जाकर वंदना करते हैं तथा अपने असंख्य कर्मों की निर्जरा करते हैं।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्यश्री 108 श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से लगभग 25-30 वर्ष पूर्व इस तीर्थ के विकास का कार्य एवं जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ। पर्वत की तलहटी में दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तीर्थ है, जिसमें दिगम्बर जैन परम्परा के अतिप्राचीन 5 मंदिर हैं – 1. श्री सातिशय विश्वहितंकर चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनमंदिर 2. श्री 1008 मूलनायक आदिनाथ भगवान जिनमंदिर 3. संकटमोचन श्री पार्श्वनाथ भगवान जिनमंदिर 4. मूलनायक मुनिसुव्रतनाथ भगवान व 24 खड्गासन तीर्थंकर जिनमंदिर 5. सहस्रकूट कमल मंदिर (गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित) साथ ही एक मानस्तंभ है। भगवान पार्श्वनाथ मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अतिशय चमत्कारिक है, जहाँ भक्तगण अपने मनोरथ सिद्ध करते हैं।

इनमें से पूज्य स्व. आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज की पावन प्रेरणा से यहाँ वर्तमान चौबीसी मंदिर का निर्माण हुआ, मानस्तंभ का पुनः निर्माण हुआ तथा सहस्रकूट जिनप्रतिमाओं का निर्माण हुआ। आचार्यश्री अपने संघ सहित जहाँ भी विहार करते थे, इस सिद्धभूमि के विकास हेतु श्रावकों को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की यात्रा एवं वहाँ सहयोग देने की प्रेरणा प्रदान करते रहते थे। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्यश्री 108 अजितसागर महाराज की समाधि के पश्चात् 10 जून 1990 को लोहारिया (राज.) की विशाल जनसभा में 80 पिच्छीधारी साधुओं सहित चतुर्विध संघ द्वारा श्री श्रेयांससागर जी महाराज को पंचम पट्टाचार्य पदवी से अलंकृत किया गया था पुनः सन् 1992 में उन्होंने अपने संघ सहित राजस्थान से श्रवणबेलगोला की ओर विहार किया, तब मार्ग में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पंचकल्याणक की भावना उनके मन में थी किन्तु 19 फरवरी 1992 फाल्गुन कृ. एकम् को खांदूकालोनी में अचानक दो दिन की बीमारी से उनका समाधिमरण

हो गया पुनः उनकी संघस्थ शिष्या पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी ने गुरु के अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लिया और अपना काफी समय इस विकास हेतु क्षेत्र के लिए समर्पित किया, वर्तमान में भी वह अपने संघ सहित मांगीतुंगी में विराजमान हैं।

महाराजश्री की समाधि के पश्चात् आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी एवं वहाँ के ट्रस्टीगण चाहते थे कि इस प्राचीन आचार्य परम्परा की सर्ववरिष्ठ दीक्षित साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन निर्देशन एवं सानिध्य में ही यहाँ का पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हो, इस हेतु उन लोगों ने 3-4 वर्षों से अपने प्रयास प्रारंभ कर दिये थे किन्तु अत्यधिक दूरी एवं स्वास्थ्य की प्रतिकूलता उसमें बाधा उत्पन्न कर रही थी। इसी बीच इस आचार्य परम्परा के संवाहक मुनि श्री 108 रयणसागर जी महाराज का संघ उधर प्रान्त में पहुँच गया। उन्होंने वहाँ सभी के निवेदन पर पंचकल्याणक महोत्सव में अपना सानिध्य देने की स्वीकृति प्रदान कर दी। इधर यहाँ विद्यमान आर्यिका श्री एवं ट्रस्टियों की ओर से पूज्य माताजी को पुनः-पुनः निवेदन चलता रहा कि पूज्य माताजी! आप जैसी दिव्यशक्ति के आने पर ही यहाँ का रुका कार्य पूर्ण हो सकता है अतः आप एक बार मांगीतुंगी अवश्य पधारकर अनेक वर्षों से रुके पंचकल्याणक को सम्पन्न करा दीजिए।। परिणामस्वरूप एक दिन (25 नवम्बर 1995 को) पूज्य माताजी के भाव बन गए और वे कहने लगीं कि मुझे मांगीतुंगी के लिए विहार करना है। पुनः 27 नवम्बर 1995 को ही हस्तिनापुर से माताजी का संघ सहित मांगीतुंगी के लिए विहार हो गया, फिर तो पूज्य माताजी के प्रवेश के साथ ही वहाँ यात्रियों का तांता लग गया।

यह सिद्धक्षेत्र के चमत्कार का ही प्रतिफल रहा है कि 19 मई 1996 से 23 मई 1996 तक वहाँ होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में तीन-तीन संघों का सानिध्य प्राप्त हुआ। इतिहास बताता है कि वि.सं. 1997 (सन् 1940) में यहाँ मानस्तंभ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज एवं आचार्यकल्प मुनि श्री वीरसागर जी महाराज का संघ सहित पदार्पण हुआ था। उसके पश्चात् दीर्घकालीन अवधि के बाद इस तीर्थ पर त्रय संघ सानिध्य में पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर के तीर्थकाल में श्री राम, हनुमान आदि 99 करोड़ मुनिराज सिद्ध हुए थे, इसलिए आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज

की प्रेरणा से 21 फुट उत्तुंग काले पाषाण की भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा एवं 6-6 फुट की अन्य 24 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

पुनः वहाँ के आर्यिका संघ के, क्षेत्र के ट्रस्टियों एवं महाराष्ट्र प्रान्तीय भक्तों के विशेष आग्रह पर माताजी का संघ सहित 1996 का चातुर्मास मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर ही हुआ, इस चातुर्मास में अनेक उपलब्धियों के साथ एक विशेष उपलब्धि हुई, जो विश्व का आश्चर्य ही कही जायेगी, वह है पर्वत की अखण्ड शिला में प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव की 108 फुट विशालकाय खड्गासन मूर्ति निर्माण की पावन प्रेरणा। पुनः समस्त सरकारी कार्यवाही पूर्ण करके, मूर्ति निर्माण हेतु नई कमेटी गठित करके 3 मार्च 2002 को पर्वत पर शिलापूजन समारोह भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

मूर्ति निर्माण का कार्य योजनाबद्ध तरीके से चल रहा है। हम सभी के लिए यह कल्पना ही रोमांचकारी है, जब हम श्रवणबेलगोला की 57 फुट ऊँची विशालकाय भगवान बाहुबली की मूर्ति के दर्शन करते हैं, तो रोम-रोम पुलकित हो उठता है फिर जब उनके पिता श्री आदिनाथ स्वामी की 108 फुट विशालकाय अद्वितीय प्रतिमा निर्मित होगी, तो वह क्षण अद्भुत ही होगा।

तीर्थ पर अनेक निर्माणकार्य चल रहे हैं, यहाँ एक भव्य प्रवेशद्वार है। यात्रियों की सुविधा के लिए भोजनशाला एवं आवास हेतु अनेक धर्मशालाएँ हैं तथा पानी आदि की पूर्ण सुविधा है। यहाँ पर प्रतिवर्ष कार्तिक सुदी पूर्णिमा के दिन भव्य मेला लगता है। इस मेले में हजारों जैन, हिंदू आदि जनता एकत्रित होती है।

ऐसे पावन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी तीर्थ को शतशः नमन।

श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पूजन

–स्थापना (शंभु छंद) –

श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी की, पुण्य धरा को नमन करूँ।
निन्यानवे कोटि मुनीश्वर की, निर्वाणभूमि को नमन करूँ।।
इस पर्वत पर प्रगटित होने वाले जिनवर को नमन करूँ।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव, तीर्थंकर पद को नमन करूँ।।1।।

–दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
मांगीतुंगी तीर्थ का, करूँ हृदय में ध्यान।।2।।

ऋषभदेव तीर्थेश की, प्रतिमा बने महान।
जिनशासन की वृद्धि हो, जग का हो कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

हिमवन गिरि पद्म सरोवर से, बहती गंगा की धारा है।
उससे प्रभु पद प्रक्षाल करूँ, भवदधि से मिले किनारा है।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की नश्वर शीतलता, अविनश्वर भी बन जाती है।
प्रभु पद में चर्चन करने से, भवदाह शांत हो जाती है।।

इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे मोती के पुंज समर्पित, करने की नहिं शक्ति प्रभो!
चावल के पुंज चढ़ाकर ही, मैं चाहूँ अक्षय धाम प्रभो।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इक कल्पवृक्ष का पुष्प प्रभो! चिरकाल सुगंधी देता है।
प्रभु पद के पुष्प चढ़ाकर मानव, शाश्वत सुख पा लेता है।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्टान्न विविध पकवानों से, तन मन को तृप्त किया मैंने।
प्रभु पद में उन्हें चढ़ाकर आत्मा को संतृप्त किया मैंने।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के लाखों दीप जगत को, चकाचौंध कर देते हैं।
प्रभु सन्मुख दीप जलाने से, मोहांधकार हर लेते हैं।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर की धूप बनाकर, जिनवर सम्मुख दहन करूँ।
मांगीतुंगी की पूजन कर, मैं भी कर्मों को दहन करूँ।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार संतरा, के उपवन हैं भरे जहाँ।
उस महाराष्ट्र के तीरथ की, पूजन में फल का थाल धरा।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चांदी-सोने के पुष्प और, रत्नों का अर्घ्य बना करके।
''चंदनामती'' मैं पद अनर्घ्य, चाहूँ प्रभु अर्घ्य चढ़ा करके।।
इक शतक आठ फुट ऋषभदेव की, प्रतिमा का निर्माण जहाँ।
उस मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की, पूजन का शुभ भाव हुआ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

जिनवर मूर्ति विशाल, शांति करे इस लोक में।
कर लूँ शांतीधार, ऋषभदेव पद धोक दे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों के उद्यान, मांगीतुंगी तीर्थ के।
पुष्पांजलि कर आज, चाहूँ निजगुण कीर्ति मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

जयमाला

तर्ज-मनमंदिर में आय जइयो.....

जिनवर की पूजा रचाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।
पर्वत के ऊपर, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर की....।।टेक.।।

पर्वत व सरवर नहीं कोई तीरथ।
जिनवर की महिमा से बनते हैं तीरथ।।
तीरथ को अर्घ्य चढ़ाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।1।।

निन्यानवे कोटि मुनि मोक्ष भूमी।
है ऐतिहासिक यह तीर्थभूमी।।
उन सबको अर्घ्य चढ़ाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।2।।

इतिहास इक जुड़ गया और इससे।
जिनवर ऋषभदेव प्रगटेंगे गिरि पे।।
सबसे ऊँची प्रतिमा को ध्याएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।3।।

हम पुण्यशाली हैं आज सबसे।
श्री ज्ञानमति मात के दर्श करके।।
उनका ही चिन्तन दिखाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।4।।

है एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा।
दुनिया में इक मात्र है जिसकी गरिमा।।
ऐसा चमत्कार पाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।5।।

तन, मन व धन सार्थक कर लो सब जन।
इक मंत्र का जाप्य भी कर लो प्रतिदिन।।
मंत्रों की महिमा दिखाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।6।।

करने कराने वाले सुखी हों।
तीरथ की भी सर्वदा उन्नती हो।।
पुष्पों की माला चढ़ाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।7।।

पर्वत की पूजन पर्वत का वंदन।
पर्वत पे जयमाला पूर्णार्घ्य अर्पण।।
पर्वत का ध्यान लगाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।8।।

पर्वत सी ऊँचाई को हम भी पाएं।
पूजन का फल ''चन्दनामति'' ये चाहें।।
अपने प्रभू को मनाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।जिनवर..।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थाधिनाथश्रीऋषभदेवप्रतिमानिर्माणपवित्र मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

–सोरठा –

ऊँचा पर्वतराज, लघु सम्मेदशिखर कहा।
मांगीतुंगी आज, पूज्य परम पावन रहा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र चालीसा

–दोहा –

सिद्धप्रभु श्रीराम को, नमन करूँ शत बार।
कोटि निन्यानवे साधु को, वन्दन बारम्बार।।1।।
प्राप्त किया शिवधाम को, तुंगी गिरि पर जाय।
बने सिद्ध परमात्मा, आत्मधाम को पाय।।2।।
मांगीतुंगी तीर्थ का, चालीसा सुखकार।
पढ़े पढ़ावें भव्यजन, पावें सौख्य अपार।।3।।

–चौपाई –

जय श्री राम जगत के स्वामी, वीतराग शुद्धातम ज्ञानी।।4।।
जिन मुनि बनकर कर्म नशाया, तुंगीगिरि से शिवपदपाया।।5।।
तीर्थ अयोध्या में जन्मे थे, पुण्य किया बलभद्र बने थे।।6।।
दशरथ के प्रिय पुत्र कहाए, भरत लखन से भाई पाए।।7।।
सीता के संग ब्याह रचाया, राजसुखों की थी ही छाया।।8।।
राजा बनने के दिन आए, तब संकट के बादल छाए।।9।।
तात वचन की रक्षा खातिर, विचरे वे वन-वन में जाकर।।10।।
सीता अरु लक्ष्मण थे संग में, दुःख भी सुख था वन उपवन में।।11।।
कई परीक्षा के क्षण आए, रामायण से सुनो कथाएँ।।12।।
सीता सति ने दीक्षा ले ली, हुए कालकवलित लक्ष्मण भी।।13।।
राम के मन वैराग्य समाया, दीक्षा ले सार्थक की काया।।14।।
उत्तर से दक्षिण में जाकर, तुंगीगिरि पर ध्यान लगाकर।।15।।
अष्टकर्म को नष्ट कर दिया, शिवलक्ष्मी का वरण कर लिया।।16।।
हनुमन्तादि महामुनि ने भी, तप कर मुक्तीकन्या वर ली।।17।।
तब से यह मांगीतुंगी गिरि, कहलाता है सिद्धक्षेत्र गिरि।।18।।
इतिहासों में इसका वर्णन, पढ़ने में आता है स्वर्णिम।।19।।
कृष्णभ्रात बलदेव भी मुनि बन, तप करने आए यहाँ गिरिपर।।20।।

उनकी मूरत पाषाणों में, बनी आज भी है खण्डहर में।।21।।
सीता जी के चरण बने हैं, वे उनके तप चिन्ह बने हैं।।22।।
हुई समाधि इन्द्र पद पाया, सफल हो गई नारी काया।।23।।
तीरथ यद्यपि पौराणिक था, दक्षिण भारत में प्रसिद्ध था।।24।।
श्री आचार्य शांतिसागर भी, आ पर्वत वंदना करी थी।।25।।
संवत उन्निस सौ तिरानवे में, पंच कल्याणक उन सन्निधि में।।26।।
पुनः उन्हीं की परम्परा के, पंचम पट्टाचार्य मुनी थे।।27।।
श्री श्रेयांससिंधु गुरु जानो, उनकी प्रबल प्रेरणा मानो।।28।।
तीर्थोद्धार हुआ वर्षों तक, बनी मूर्तियाँ चौबीसों प्रभु।।29।।
मुनिसुव्रत की सुन्दर प्रतिमा, चौबीसी मंदिर की महिमा।।30।।
मानस्तंभ बना है नीचे, कितने ही अतिशय वहाँ दीखे।।31।।
पार्श्वनाथ पद्मासन प्रतिमा, इन सबसे तीरथ की गरिमा।।32।।
गणिनी ज्ञानमती जी पधारीं, हुआ पंचकल्याणक भारी।।33।।
सहस्रकूट मंदिर बनवाया, गिरि पर जाकर ध्यान लगाया।।34।।
नई एक उपलब्धि हो गई, इक सौ अठ फुट की हो मूर्ती।।35।।
ऋषभदेव प्रतिमा प्रगटाओ, पर्वत पर अतिशय दिखलाओ।।36।।
वही हुई साकार प्रेरणा, सफल हुई माता की देशना।।37।।
सबसे ऊँची प्रतिमा होगी, जिनशासन की गरिमा होगी।।38।।
जिनवर की निर्वाण भूमि यह, सन्तों की है कर्मभूमि यह।।39।।
न्याय यहाँ विजयी होता है, मान यहाँ खण्डित होता है।।40।।

–दोहा–

चालीस दिन तक जो पढ़े, यह चालीसा पाठ।
निजगुण में उत्तुंग वे, करें जगत में ठाठ।।1।।

ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, की शिष्या अज्ञान।
रचा ''चन्दनामति'' सुखद, सिद्धक्षेत्र गुणगान।।2।।

श्री ऋषभदेव स्तुतिः

–बसन्ततिलका छन्द –

आदीश्वरादिजिनसूर्ययुगादिनाथः,
साकेतशासनपतिः पुरुदेवनाथः।
स्वायम्भुवः सकललोकहितंकरो यः,
तं नाभिनन्दनजिनं प्रणमामि नित्यं।।1।।

अद्यापि नाम तव देव! जगत्प्रसिद्धः,
श्रुत्वा मयापि तव सन्निधमागतो हि।
भक्ताः रमन्त इह भक्तिसुधारसे ते,
तं नाभिनन्दनजिनं प्रणमामि नित्यं।।2।।

कालेऽवसर्पिणि तृतीययुगेऽन्तिमे हि,
जन्मो बभूव वृषभस्य दिवाकरस्य।
मिथ्यान्धकारहरणाय विभो! समर्थः,
तं नाभिनन्दनजिनं प्रणमामि नित्यं।।3।।

मूर्तिः प्रभो। तव सुसद्मनि राजतेऽत्र,
भक्ताः लभन्त इह बोधमणिं च दृष्ट्वा।
रत्नत्रयं किल विकासयितुं ममेच्छा,
तं नाभिनन्दनजिनं प्रणमामि नित्यं।।4।।

माता तवास्ति जगतीह सुरेन्द्रवंद्या,
भो देव! पादयुगले किल सापि नौति।
बुद्ध्या विनापि क्रियते स्तवनं मया च,
तं नाभिनन्दनजिनं प्रणमामि नित्यं।।5।।

–अनुष्टुप्–

इत्थंभूतां स्तुतिं कृत्वा, नाभेयस्य महात्मनः।
बोधिं समाधिमिच्छामि, चन्दनामतिरार्यिका।।6।।

श्री ऋषभदेव चालीसा

–दोहा –

सिद्धप्रभू को नमन कर, सिद्ध करूँ सब काम।
अरिहन्तों के नमन से, पाऊँ आतम धाम।।1।।
पंचकल्याणक से सहित, तीर्थंकर अरिहन्त।
अष्टकर्म को नष्ट कर, बने सिद्ध भगवन्त।।2।।
उनमें ही प्रभु ऋषभ का, चालीसा सुखकार।
पढ़ो सुनो सब भव्यजन, हो जाओ भव पार।।3।।

–चौपाई –

जय हो आदिनाथ परमेश्वर, जय हो ब्रह्मा विष्णु महेश्वर।।1।।
हो जयवंत अयोध्या तीरथ, जिनवर जन्मभूमि की कीरत।।2।।
सुषमादुषमा तृतिय काल था, भोगभूमि का भी प्रयाण था।।3।।
नाभिराय अंतिम कुलकर थे, कर्मभूमि के वे कुलधर थे।।4।।
सर्वप्रथम इन्द्रों ने आकर, नाभिराय का ब्याह रचाकर।।5।।
कर्मभूमि प्रारंभ किया था, नगरी में आनन्द किया था।।6।।
शुभ विवाह की परम्परा यह, चली तभी से इस धरती पर।।7।।
राजमहल सर्वतोभद्र था, इक्यासी खन का सुन्दर था।।8।।
नाभिराय के उसी महल में, मरुदेवी माँ के आंगन में।।9।।
रत्नवृष्टि की थी कुबेर ने, पन्द्रह महिने तक धनेश ने।।10।।
थी आषाढ़ वदी दुतिया तिथि, मरुदेवी के गर्भ बसे प्रभु।।11।।
चैत्र कृष्ण नवमी शुभ तिथि में, आदिनाथ तीर्थंकर जन्मे।।12।।
तीन लोक में शांति छा गई, अवध में नूतन क्रान्ति आ गई।।13।।
देवों के संग खेल खेलकर, बड़े हो गये ऋषभ जिनेश्वर।।14।।
स्वर्गों से ही भोजन आता, समझ नियोग दुखी नहिं माता।।15।।

यौवन में प्रभु ब्याह रचाया, यशस्वती व सुनन्दा पाया।।16।।
इक सौ एक पुत्र दो पुत्री, उनमें प्रथम भरत थे चक्री।।17।।
जिनसे भारत देश कहाया, छह खण्डों में ध्वज लहराया।।18।।
इक दिन ऋषभदेव की सभा में, नृत्य दिखाया नीलांजना ने।।19।।
जग वैभव असार बतलाया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।20।।
वह भी चैत्र कृष्ण नवमी थी, जब जिनवर ने दीक्षा ली थी।।21।।
वह नगरी प्रयाग कहलाई, वटतरुतल प्रभु दीक्षा पाई।।22।।
एक वर्ष उनतालिस दिन में, प्रथम आहार हस्तिनापुर में।।23।।
सोमप्रभ श्रेयांस महल में, पंचाश्चर्य रतन बरसे थे।।24।।
अक्षय तृतिया पर्व तभी से, मना रहे सब लोग खुशी से।।25।।
एक हजार वर्ष तक तप कर, आत्मा में कैवल्य प्रगट कर।।26।।
समवसरण लक्ष्मी को पाया, जग को मोक्षमार्ग बतलाया।।27।।
वह थी फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि, केवलज्ञान कल्याणक शुभ तिथि।।28।।
पुरिमतालपुर के उद्यान में, समवसरण में मुनि प्रधान थे।।29।।
अष्टापद गिरि पर जा करके, योग निरोध किया जिनवर ने।।30।।
माघ कृष्ण चौदस शुभ तिथि में, कर्म अघाती नष्ट किए थे।।31।।
मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया, शिवलक्ष्मी का वरण कर लिया।।32।।
सब पुत्रों ने दीक्षा लेकर, प्राप्त किया शिवधाम हितंकर।।33।।
ब्राह्मी-सुंदरि बनीं आर्यिका, गणिनी पद की प्रथम धारिका।।34।।
यह सब है इतिहास पुराना, वर्तमान को है बतलाना।।35।।
गणिनी माता ज्ञानमती की, प्रबल प्रेरणा प्राप्त हो गई।।36।।
ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव, खूब मनाओ महामहोत्सव।।37।।
जैनधर्म प्राकृतिक बताओ, सार्वभौम सिद्धांत सुनाओ।।38।।
और नहीं मैं कुछ भी चाहूँ, जनम जनम प्रभु दर्शन पाऊँ।।39।।
मेरी आतम निधि मिल जावे, निज गुण कीर्ति ध्वजा फहराए।।40।।

–दोहा –

दुतिया कृष्ण अषाढ़ की, कृति चालीसा ख्यात।
वीर संवत पच्चीस सौ, तेइस तिथि विख्यात।।1।।

अज्ञ आर्यिका चन्दना-मती रचित गुणगान।
मुझमें गुण विकसित करें, दे त्रयरत्न महान।।2।।

चालिस दिन तक जो करे, यह चालीसा पाठ।
तन मन पावन वो करे, लहे जगत का ठाठ।।3।।

भजन

तर्ज –दीदी तेरा.....

मांगीतुंगी तीरथ पुराना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।
तुंगी पर्वत ऊँचा सुहाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।टेक.।।
न पर्वत हैं तीरथ, न सरवर हैं तीरथ,
जिनेन्द्रों की महिमा से बनते हैं तीरथ।।
भवसिन्धु से जो तिरावे जगत को,
वही माने जाते हैं सच्चे तीरथ।।
तीरथ की कीरत बढ़ाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।1।।

इसी गिरि से निन्यानवे कोटि मुनियों ने,
तप करके शिवलक्ष्मी पाया उन्होंने।
उन्हीं की तपस्या का अतिशय वहाँ पर,
दिखा करता है दर्श पाया जिन्होंने।।
वन्दन करके पुण्य कमाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।2।।

चौबीस जिनबिम्ब से युत जिनालय,
जिनवर श्री मुनिसुव्रत मूलनायक।
श्रेयांससागर गुरू प्रेरणा से
बना है वृहत्काय मंदिर सुखालय।
सबको श्रद्धा से सिर झुकाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।3।।

इस तीर्थ पर प्रभु ऋषभदेव की,
इक सौ अठफुट की प्रतिमा प्रगट हो रही है।
कलिकाल की सबसे ऊँची ये प्रतिमा,
प्रभु कीर्ति को ''चन्दना'' कह रही है।।
पर्वत वंदन करके ही जाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।4।।

भजन

तर्ज –राम जी निकली.....

ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी, बने पर्वत पे ऊँची निराली-निराली।
धरती से सोलह सौ फुट ऊँचाई, पर है अखंड शिला एक प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।टेक.।।

है ऐतिहासिक निर्वाण भूमि।
निन्यानवे कोटि मुनि सिद्धभूमी।।
महाराष्ट्र का सम्मेदशिखर है।
श्री मांगीतुंगी तीरथ प्रवर है।।

प्राचीन तीरथ, मुनियों की कीरत, बतलाती है वह धरती निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।1।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने।
कर ध्यान एवं तपस्या गिरी पे।।
दी प्रेरणा मूर्ति निर्माण होवे।
जिनसंस्कृति कीर्तीमान होवे।

गुरुप्रेरणा से, भक्तों के धन से, साकार हुई योजना यह निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।2।।

हो कार्य सिद्धी बन जाए प्रतिमा।
श्री एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा।।
सब मिल करो मंत्र का जाप्य भक्तों।
निर्विघ्न हो 'चंदना' कार्य भक्तों।

देखेंगे हम भी, देखोगे तुम भी, पर्वत पे प्रगटेगी जब प्रतिमा प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।5।।

भजन

तर्ज –माई रे माई.....

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर, स्वर्णिम अवसर आया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।
बोलो ऋषभदेव की जय, बोलो ऋषभदेव की जय.।।टेक.।।

जहाँ कभी श्री रामचंद्र ने मोक्षधाम पाया था।
निन्यानवे कोटि मुनियों ने भी शिवपद पाया था।।
उस पर्वत पर ऋषियों ने भी, आतमध्यान लगाया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलोऋषभदेव.।।1।।

वही ध्यान की परम्परा, जीवन्त हुई है अब फिर।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमति का, चौमास हुआ तीरथ पर।।
सन् उन्निस सौ छियानवे में, उनका चिन्तन आया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलोऋषभदेव.।।2।।

इस अद्भुत निर्माण को करने, वाले सभी सफल हों।
स्वस्थ चिरायू बने ''चंदनामति'' उन यश उज्ज्वल हो।
कोष खोल दो तुम भी अपना.....
कोष खोल दो तुम भी अपना, है यह चंचल माया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलोऋषभदेव.।।3।।

भजन

तर्ज–जब से प्रभु दर्श मिला.....

सबसे बड़ी मूर्ति का, मांगीतुंगी तीर्थ का,
दुनिया में नाम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।टेक.।।

ऋषभदेव प्रभुजी की प्रतिमा-2।
बनेगी धरा की यह गरिमा-2।।
जैन संस्कृति की धरोहर-2।
होगी यह सचमुच मनोहर-2।।
देखो जा के पास में, भक्ति लेके साथ में,
पर्वत पे काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी-2।
प्रेरणा मिली है उन्हीं की-2।।
भक्त सभी, उसमें जुट पड़े-2।
सबके, भाव दान में बढ़े-2।।
तुम भी प्रभु का ध्यान करो, जितना बने दान करो,
सबसे बड़ा काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।2।।

प्रतिमा इक सौ, आठ फुट की है-2।
विश्व की अनमोल यह कृती है-2।।
भाव है ये ''चन्दनामती''-2।
शीघ्र बनके प्रगट हो मूर्ती-2।।
हो प्रतिष्ठा ठाठ से, हम सभी हों साथ में,
सबको यही भान हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।3।।

भजन

तर्ज –सोनागिरि में .....

सबसे ऊँची प्रतिमा हमें बनाना है।
ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र को निधी मिली।।
सबसे ऊँची.....।।टेक.।।

निन्यानवे करोड़ मुनियों को मिली मुक्ती।
श्रीराम हनुमन्तादि ने पाई जहाँ सिद्धी।।
तुंगीगिरी पर आज उनकी मूर्तियां दिखतीं।
मानो तपस्या कर रही हैं मूर्तियां उनकी।।
ऊपर चढ़कर वंदन करने जाना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।1।।

सन् उन्निस सौ छियानवे का वर्षायोग था।
गणिनी माता ज्ञानमती का संघ था वहाँ।।
उनके वर्षायोग में संयोग बना ऐसा।
सोने में मानो आ गई सुगंधी के जैसा।।
बदल गया उस तीरथ का नजराना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।2।।

अब प्रतीक्षा की घड़ी हों पूर्ण जल्दी से।
भगवान का निर्माण हो संपूर्ण जल्दी से।।
शीघ्र प्रभु का मस्तकाभिषेक करना है।
प्रभु चरण में वंदना सिर टेक करना है।।
यही ''चंदनामती'' भावना भाना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।3।।

भजन

तर्ज –मन मंदिर में.....

सबसे ऊँची प्रतिमा बनाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।
पर्वत के ऊपर, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.....।।टेक.।।

हमने न देखे वे आचार्य गुरुवर
जिस प्रेरणा से बने गोम्मटेश्वर।

फिर से वो दृश्य दिखाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।1।।

हम पुण्यशाली हैं आज भक्तों,
श्री ज्ञानमती मात के दर्श कर लो।

उनका ही चिंतन दिखाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।2।।

है एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा,
दुनिया में इक मात्र फैलेगी गरिमा।

ऐसा चमत्कार पाएँगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।3।।

तन, मन व धन सार्थक कर लो सब जन,
इक मंत्र का जाप्य भी करना प्रतिदिन।

जिससे देव भी आएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।4।।

करने, कराने वाले सुखी हों
'चंदनामती' तीर्थ की उन्नती हो।

अब भक्त सब सिद्धि पाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।5।।

भजन

तर्ज –अब ना छुपाऊँगा.....

जिनवर जयकारा हो, जिनधर्म प्यारा हो।
भारत क्या दुनिया भर में, गूंजे इक नारा हो,
मांगीतुंगी में बने शीघ्र सबसे ऊँची प्रतिमा।।टेक.।।

ऋषभदेव प्रभु प्रगटेंगे, हम उनकी छवि निरखेंगे।
इक सौ अठ फुट प्रतिमा की, अनुपम कृति को देखेंगे।
जिनवर जयकारा हो, जिनधर्म प्यारा हो,
भारत क्या दुनिया भर में, गूंजे इक नारा हो,
मांगीतुंगी में बने शीघ्र सबसे ऊँची प्रतिमा।।1।।

धन जो इसमें लगाते हैं, अपना भाग्य जगाते हैं।
ऋद्धि समृद्धि पाते हैं, तन को स्वस्थ बनाते हैं।
जिनवर जयकारा हो.....।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती, इस युग की चैतन्य कृती।
उनकी ही प्रेरणा मिली, ज्योति ''चन्दनामती'' जली।।
जिनवर जयकारा हो.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

भजन

तर्ज –जरा सामने तो.....

तीरथयात्रा का पुण्य विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।टेक.।।

कोई गंगा को तीरथ कह, उसमें डुबकी लगाते हैं।
कोई संगम तट पर जाकर, निज को शुद्ध बनाते हैं।।
सच्चे तीरथ की कीरत विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।1।।

सत्य अहिंसा करुणा की, नदियाँ जहां कल कल बहती हैं।
उनमें पापों के क्षालन को, जनता आतुर रहती है।।
वही तीरथ अलौकिक विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।2।।

कहीं किसी पर्वत पर जाकर, महामुनी तप करते हैं।
वृक्षों के नीचे भी तपकर, केवलज्ञानी बनते हैं।।
वे ही तीरथ कहाते विशाल हैं, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।3।।

ये सब द्रव्य तीर्थ हैं चेतन भाव तीर्थ कहलाता है।
चलते फिरते तीर्थ साधुगण जिनका मोक्ष से नाता है।।
''चंदनामति'' ये तीरथ विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।4।।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की आरती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे.....

आरती मांगीतुंगी की,
सिद्धक्षेत्र से, सिद्धी को प्राप्त, सिद्धों की
आरतिया।।टेक.।।

निज आत्मसिद्धि करने को, प्रभु राम यहां आये थे।
निन्यानवे कोटि मुनी भी, यहिं से शिवपद पाये थे।।
आरती मांगीतुंगी की।।1।।

मांगी एवं तुंगीगिरि, दोनों आदर्श खड़े हैं।
वहां निर्मित जिनालयों में, जिनवैभव भरे पड़े हैं।।
आरती मांगीतुंगी की।।2।।

पर्वत की तलहटी में जिन, मंदिर आदीश्वर का है।
अतिशयकारी प्रतिमायुत, मंदिर पारस प्रभु का है।।
आरती मांगीतुंगी की।।3।।

मुनिसुव्रत तीर्थंकर का, जिनमंदिर अति विस्तृत है।
श्रेयांस सिन्धु सूरी की, यह अमिट हुई स्मृति है।।
आरती मांगीतुंगी की।।4।।

प्रभु मेरा यह घृत दीपक, अंतर की ज्योति जलावे।
'चंदनामती' सिद्धों की, रज कण मुझको मिल जावे।।
आरती मांगीतुंगी की।।5।।